पु० सं - 09

नास्तिकता

का खंडन

लेखक - मोहम्मद अनस बन्दियालवी

अनुवादक - मोहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

प्रकाशक

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

Book name : Nastikta Ka Khandan (Refutation Of Atheism)

Language : Hindi

Authored by : Maulana Muhammad Anas Sahab Bandialvi

Translated by: Muhammad Hassaan Raza Rayeeni

Hijri Date : 02 Zul Qa’dah 1442 H

English Date : 13 June 2021(Sunday)

Publisher : Tehreek Nizam e Mustafa (India) or TNM Official

Any Query, contact us : 9675801762 & 9720315389

About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa ﷺ" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TNM OFFICIAL

नास्तिकता और समकालीन मुसलमान

नास्तिकता तथा अधर्म का अस्तित्व प्राचीन काल में हुआ। वर्तमान युग और प्राचीन युग में अंतर यह है कि अतीत में सच्चे धर्म के अनुयायी नास्तिकता को अपने करीब भी नहीं आने देते थे। अन्य धर्मों के लोग नास्तिकता को पसंद नहीं करते वे भी किसी धर्म से संलग्नक रहते थे, भले ही उनका धर्म झूठा था।

नास्तिकता तब पनपने लगी जब लोग व्यावहारिक बुराइयों में अधिक से अधिक शामिल हो गए। नास्तिकों ने सोचा कि जब धर्म में विश्वास करने वाले लोग कहते हैं कि हर बुरे काम का एक बुरा अंत होता है, फिर भी यदि वे बुराइयों में लगे हुए हैं तो इसका मतलब यही है कि धर्म की बुनियाद केवल मिथक बातों पर है इस प्रकार, लोगों का झुकाव अधर्म और नास्तिकता की ओर होने लगा।

हैरानी और दुख इस बात पर है कि मुस्लिम समाज के कुछ स्वयंभू युवा भी नास्तिकता की ओर रुख कर रहे हैं। नास्तिकता को बढ़ावा देने वाले विभिन्न मोर्चों पर बढ़ावा देने की कोशिश कर रहे हैं। वे बौद्धिक तर्कों के द्वारा नास्तिकता को सही ठहराने की कोशिश करते हैं और कुछ लोग इस मुसीबत में पड़ जाते हैं।
ये बात अत्यावश्यक है कि नास्तिकता की रोकथाम के लिए कोशिश की जाए। श्री हस्सान मलिक साहिब राईनी नास्तिकता की रोकथाम के लिए कोशिश कर रहे हैं।

उन्होंने नास्तिकता के खंडन के लिए जामिया नदरत-उल-उलूम कराची, पाकिस्तान के एक विद्वान हजरत अल्लामा अनस बंदियालवी साहब की पुस्तक "धर्मनिरपेक्षता, उदारवाद और नास्तिकता का एक संक्षिप्त परिचय" को चुना। इस पुस्तक में नास्तिकता के खंडन पर जो लेख था उस का उपयोग करते हुए, उन्होंने हिंदी भाषा में एक पत्रिका का संकलन किया । यह पत्रिका "नास्तिकता का खंडन" के नाम से प्रकाशित की जा रही है।

खुदा उन्हें सफलता प्रदान करें और नास्तिकता और अधर्म की विचारधारा को नष्ट करें: आमीन

तारिक़ अनवर मिस्बाही

चीफ एडिटर महानामा पैग़ामे शरीयत देहली

13 जून 2021

नास्तिकता

का खंडन

लेखक- मोहम्मद अनस बन्दियालवी

अनुवादक- मोहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

प्रकाशक- तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

यह अंतिम चर्चा है और हम यहाँ निम्नलिखित चीज़ों के बारे में लिखेंगे

1) नास्तिकता की परिभाषा और उसके संप्रदाय

2) नास्तिकता का इतिहास

3) गैर-मुस्लिमों में इसका प्रभाव

4) मुस्लिमों में इसका प्रभाव

5) (नास्तिकों की) आपत्तियों के उत्तर देने के सिद्धांत

6) प्रसिद्ध आपत्तियों के उत्तर

1) नास्तिकता की परिभाषा और उसके संप्रदाय

परिभाषा: खुदा के अस्तित्व को नकारना, चाहे वह एक इकाई के रूप में हो या कई देवताओं के रूप में।

It (Atheism) is the belief that there is no God or gods..

(Julion baggani, Atheism, oxford university press)

नोट: मुसलमानों का विश्वास ये है के ख़ुदा एक है।

संप्रदाय:

नास्तिकता के तीन बड़े संप्रदाय[1] हैं।

1) प्रज्ञानवाद (GNOSTICISM)

खुदा के अस्तित्व को पूर्ण रूप से नकारना, और ब्रह्मांड के अस्तित्व को एक दुर्घटना और आकस्मिक समझना, और ब्रह्मांड की निरंतरता[2] को प्रकृति का नियम कहना।

2) अज्ञेयवाद (AGNOSTICISM)

खुदा के अस्तित्व को समझ से परे समझना तो जब उन लोगों से ख़ुदा के बारे में प्रश्न किया जाता है, तो कहते हैं, "हम नहीं जानते।"

3) निमित्तेश्वरवाद (DEISM)

खुदा के अस्तित्व में विश्वास रखना और यह भी स्वीकार करना कि उसने ब्रह्मांड की रचना की लेकिन फिर निमित्तेश्वरवाद में विश्वास रखना, निमित्तेश्वरवाद का मतलब है कि ब्रह्मांड की रचना के बाद, खुदा ने ब्रह्मांड को चलाने के नियम बना दिए और अब ब्रह्मांड स्वयं चल रहा है, खुदा का अब उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं है जैसे मनुष्य एक "स्वचालित मशीन" बनाकर निस्वार्थ हो जाता है।

1.Sects 2.Continuity

प्रामाणिक[1] और सार्वभौमिक[2] तर्कों के आधार पर इन लोगों ने ख़ुदा के अस्तित्व को नकारा तो नहीं, परन्तु ज़ाहिरी[3] कारणों को देख कर हर पल, उसकी प्रभावशीलता का इनकार किया

2) नास्तिकता का इतिहास:

दुनिया में अधिकांश लोग एक या एक से अधिक ख़ुदाओं के वैसे भी मानने वाले रहे हैं, लेकिन प्राचीन काल से ही कुछ लोग ख़ुदा के अस्तित्व को नकाराने वाले भी रहे हैं। सिर्फ नास्तिकता कभी भी शक्तिशाली धर्म नहीं बन सका। इसको वास्तविक प्रोन्नति आधुनिक समय में ही प्राप्त हुई सोलहवीं शताब्दी से इसका इतिहास शुरू कर सकते हैं। बीसवीं शताब्दी में, इसके प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास, चरम पर पहुंच गया

रिचर्ड डाकिंस (Richard Dawkins) 1941

सैम हैरिस (Sam Haris) 1967

क्रिस्टोफर हेचिंज़ (Cristopher Hatchins) 1949

डेनियल डेंट (Daniel Dent) 1942

उपर्युक्त नास्तिकों ने अपने लेखन के माध्यम से नास्तिकता को लोकप्रिय बनाया और अपने विचारों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सेमिनार भी आयोजित किए।

1.Authentic 2.Universal 3.Apparent

3) गैर-मुस्लिमों में इसका प्रभाव:

नास्तिकता (जो के विवाद की जड़ है और उस तक पहुंचाना ही गैरों का लक्ष्य है) ने गैर-मुस्लिम जातियों में बहुत तेजी से लोकप्रियता हासिल की। विशेष रुप से नास्तिकता ने ईसाई धर्म को पूर्णतः किनारे लगा दिया और बहुत से लोगों को नास्तिक बना दिया, अतः वे नाम के तो ईसाई हैं, लेकिन विश्वास में वे तसलीस[1] और एक खुदा तो दरकिनार, ख़ुदा के अस्तित्व को भी नहीं मानते।

हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म आदि में, विश्वास की अनुचित स्वतंत्रता की धारणा पहले ही मौजूद थी, अतः लोग चाहे धर्म और ख़ुदा की कितनी भी निंदा कर लें, फिर भी वो धर्म से निष्कासित नहीं कहलाता है। इसी के आधार पर अन्य धर्मों में नास्तिकता को बढ़ावा तो खूब मिला और काम भी हुआ परन्तु नाम नहीं हुआ

4) मुस्लिमों में इसका प्रभाव:

नास्तिकता को सबसे बड़ी चुनौती और विरोध तथा अड़चन इस्लाम के सामने ही होती है , जिसके समाधान के लिए धर्मनिरपेक्ष[2] और उदारवादी[3] विचारधाराओं को बढ़ावा दिया गया । एक मुसलमान चाहे जितना भी अनैतिक[4] हो वह ख़ुदा के अस्तित्व तो दूर की बात एक खुदा में विश्वास को भी नहीं नकार सकता । वह कुछ मुसलमान जो नास्तिक हो गए, इसका मुख्य कारण शुरू से ही पश्चिमी मानसिकता थी, साथ ही इस्लामी शिक्षाओं से अपरिचितता या (उसमें) कठिनाई ने उन्हें इस भयानक गड्ढे में धकेल दिया।

1. 3 खुदा में विश्वास रखना   2. Secular   3.Liberal   4.Immoral

5) (नास्तिकों की) आपत्तियों के उत्तर देने के सिद्धांत :

ख़ुदा के अस्तित्व को नकारने के लिए जो संदेहात्मक तर्क दिए जाते हैं उन के उत्तर देने से पश्चात कुछ बुनियादी बातों का जानना महत्वपूर्ण है।

अ) दृष्टांतिक प्रमाण[1]

नास्तिकों से जब किसी भी मुद्दे में वार्तालाप किया जाये तो वे तुरंत कहते हैं के इस चीज़ का कोई प्रमाण दो

उदाहरण के लिए, यदि हम कहते हैं कि पैगंबर मूसा عليه السلام के पवित्र छड़ी मारने से, समुद्र में 12 रास्ते बन गए, तो सामने से तुरंत कहेंगे कि इसका कोई प्रमाण दो तो हम विश्वास करेंगे।

इस प्रश्न को वे जितना मज़बूत समझते हैं ये उतना ही कमज़ोर है क्योंकि यदि इस नियम को स्वीकार कर लिया जाए, तो हर चीज़ को साबित करने के लिए कम से कम दो बार इसका अस्तित्व शर्त हो जाएगा, और यह स्थिति बौद्धिक रूप से अस्वीकार्य है।

उदाहरण के लिए, अगर किसी को यह साबित करना हो कि चंगेज खान बहुत क्रूर तथा निर्दयी व्यक्ति था और उसने मानव की खोपड़ियों का एक मीनार बनाया था। तो कम से कम दो बार इस दुनिया में ऐसे व्यक्ति और मीनार का अस्तित्व हो तो यह माना जाएगा। हर समझदार व्यक्ति इस मांग की कमज़ोरी को समझता है।

1.Illustrative evidence

ब) बुद्धि से परे तथा तर्कहीन:

चूंकि नास्तिकता के तर्क केवल संदेह पर आधारित होते हैं, इसलिए ये दो भिन्न बातों को एकत्रित करके या तो भ्रम में स्वयं निहित हैं या जानबूझकर दूसरों को गुमराह करते हैं

"बुद्धि से परे" का अर्थ ये है कि किसी चीज़ का हमारी समझ से उच्चतर होना या समय पर उसका समझना कठिन होना

उदाहरण के लिए

आज से सौ (१००) साल पहले रहने वाले व्यक्ति के लिए यह चीज़ समझ से परे है कि एक व्यक्ति पूर्व में हो और दूसरा पश्चिम में हो, लेकिन वे दोनों जब चाहें एक-दूसरे से संपर्क करें, एक-दूसरे की बात सुनें , चित्रों को देखें, आदि। परन्तु इस समय इस बात को तर्कहीन कहना मूर्खता है

आइंस्टीन के शोध के अनुसार ब्लैक होल की परिभाषा ये है कि जब किसी सितारे का अन्त होता है, तो वह कृष्ण विवर (ब्लैक होल) बन जाता है, जहाँ समय और स्थान दोनों का अस्तित्व नहीं होता है।"

ऐसे स्थान का अस्तित्व होना बल्कि कल्पना होना के वहां न समय है न स्थान है, समझ से परे है न के तर्कहीन और आश्चर्य की बात यह है के यह समझ से परे बात आम तौर पर स्वीकृत है

संक्षेप में ये है कि ख़ुदा के अस्तित्व और अन्य इस्लामी सिद्धांतों के बारे में सिर्फ यह कह देना के ये "समझ से परे" है पर्याप्त नहीं होगा बल्कि केवल संभावना से ही बात को आगे बढ़ाया जा सकता है।

स) दावे की स्वीकृति के मानदंड

दावा स्वीकार करने के दो सिद्धांत हैं

बौद्धिक रूप से संभव हो

तर्क से सिद्ध हो

फिर तर्क तीन प्रकार के होते हैं

1) पाँचों इंद्रियाँ[1]

2) बुद्धि

3) सूचना

1.Five Senses

पाँचों इंद्रियाँ : पाँचों इन्द्रियों (देखना, सुनना, सूंघना, चखना, छूना) के माध्यम से तर्क देना सभी में स्वीकृत है, उदाहरण के लिए दिन चढ़े, उगते सूरज को नकारना पागलपन के सिवा कुछ नहीं।

बुद्धि : बुद्धि द्वारा तर्क देना भी विचारशील लोगों में स्वीकृत है, उदाहरण के लिए

1) समुद्र तट की रेत पर पैरों के निशान, किसी के गुज़रने का प्रमाण हैं।

2) कमरे में हम पुस्तक एक जगह रख दें कुछ देर बाद अगर वह अपनी पुरानी जगह पर न हो तो वास्तव में बुद्धि कहती है कि उसका स्थान किसी ने बदल दिया है।

आज का विज्ञान गुरुत्वाकर्षण, ऊर्जा, तरंगदैध्य आदि को स्वीकृत करता है सिर्फ बुद्धि के आधार पर

सूचना : आधिकारिक स्रोतों[1] से प्राप्त सूचना भी प्रमाण होती है।

उदाहरण के लिए:

1) चिकित्सक ये सूचना देते है कि निम्न बीमारी शहर में फैल गई है

2) आइंस्टीन ने कृष्ण विवर (ब्लैक होल) के अस्तित्व और उसके गुणों के बारे में बताया।

1.Official Sources

उपरोक्त कथनों को चिकित्सकों और आइंस्टीन की सूचना देने से केवल इसलिए मान्यता दी गयी है क्योंकि वे अपने फन के विशेषज्ञ माने जाते हैं।

अतः आने वाली आपत्तियों के उत्तर भी हम इन्हीं तर्कों से देंगे

6) प्रसिद्ध आपत्तियों के उत्तर

आपत्ति: 1

ख़ुदा का अस्तित्व सिद्ध नहीं है, बल्कि प्रकृति के नियम[1] इस ब्रह्मांड को चला रहे हैं और इस ब्रह्मांड में जीवन की उत्पत्ति के लिए मनुष्य का एक निर्माता में विश्वास रखना आवश्यक नहीं क्योंकि विकासवाद के सिद्धांत से यह सिद्ध है कि मनुष्य से पहले विभिन्न जानवरों के रूप थे और सबसे पहले एक स्वयं प्रतिकृति मॉड्यूल[2] मौजूद था, जिसकी विकासवादी अवस्था मनुष्य है। अतः किसी ख़ुदा के अस्तित्व को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है।

उत्तर: इस आपत्ति के कुछ पहलू हैं

विकास का सिद्धांत[3]:

1. Laws of Nature 2. Self replicating module 3. Theory of Evolution

डार्विन के इस सिद्धांत ने नास्तिकता का पुरज़ोर समर्थन किया, लेकिन बीसवीं शताब्दी में बहुत शोध के बाद, वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि किसी भी प्रजाति में परिवर्तन आनुवंशिक[1] सीमाओं से परे नहीं जाते हैं।

दूसरी बात:

1929 में, अमेरिकी खगोलशास्त्री एडविन ने पाया कि आकाशगंगाएं एक दूसरे से दूर जा रही हैं। इस अध्ययन से निष्कर्ष निकाला गया कि किसी समय आकाशगंगाएं एकजुट थीं और फिर महाविस्फोट (बिग बैंग) से अलग हो गयीं ।

इस आधुनिक शोध ने डार्विन के सिद्धांत का खंडन कर दिया जिसके कारण बहुत से नास्तिक बिग बैंग थ्योरी से मजबूर हैं।

तीसरी बात:

इस आधुनिक शोध ने डार्विन के सिद्धांत को कानूनी हैसियत से नीचे कर दिया और यह केवल सिद्धांत ही है।

यदि इन्हीं नास्तिकों को इस विचारधारा के आधार पर बंदरों की संतान कह दिया जाए तो वे क्रोध से लाल पीले हो जाते हैं।

1.Genetic

चौथी बात:

ख़ुदा के अस्तित्व के लिए सबसे प्रसिद्ध तर्क यह है कि हर चीज़ का निर्माता कोई न कोई अवश्य होता है, क्योंकि जब उत्पाद होगा , तो निर्माता अवश्य होगा

इसका आसान उदाहरण ये है के मुर्गी का अस्तित्व पहले है या अंडे का ? इसके जवाब में कानून पहले कारण तक पहुंच जाएगा कि किसी अन्य अस्तित्व ने उन्हें पहले बनाया है।

वैज्ञानिक तर्क भी दिया जा सकता है कि जब आइंस्टीन ने ये बात बता दी कि ब्लैक होल है और लोग इस समझ से परे बात पर विश्वास भी कर रहे हैं, तो हम भी कहते हैं कि जब ख़ुदा के पैगम्बर ﷺ ने बता दिया कि ख़ुदा है, तो हमने भी मान लिया, जो आपको समझ से परे था आपने मान लिया तो हमने भी मान लिया, इसमें कौन सी अजीब बात है

आपत्ति : 2

ख़ुदा सभी चीजों का निर्माता है, तो ख़ुदा का निर्माता कौन है?

उत्तर:

इस प्रश्न के कई उत्तर हैं । सबसे पहले तो ये प्रश्न ही सही नहीं क्योंकि प्राणी का तो निर्माता होता है लेकिन निर्माता का निर्माता होना संभव नहीं है।

दूसरा दोषिय उत्तर यह है कि वैसे तो आप विश्वास कर रहे हैं कि संपूर्ण ब्रह्मांड एक निर्माता के बिना अस्तित्व में आ गया और निर्माता के बारे में निर्माता का प्रश्न करते हैं क्या यह खुला विरोधाभास[1] नहीं है?!

तीसरा उत्तर बहुत ही अच्छा है। तार्किक शब्दों में इसे श्रेणीबद्ध गलती[2] कहते हैं।

अगर कोई कहे कि अंडा किस पेड़ पर उगता है, तो यह प्रश्न ही फ़िज़ूल है। इसी तरह, अगर किसी के पिता को अस्पताल में भर्ती करें और उनसे प्रश्न हो के : आपके पिता के यहां लड़का पैदा हुआ या लड़की?

जब हम ने किसी को खुदा मान लिया, तो उसके लिए ये प्रश्न करना कि उसका निर्माता कौन है? तो यह भी एक बेवकूफी भरा सवाल है, खुदा निर्माता है, वह प्राणी नहीं हो सकता।

आपत्ति: 3

जब कोई चीज़ दिखाई नहीं देती तो हम उस पर कैसे विश्वास करें?

उत्तर:

किसी चीज का नज़र ना आना देखने की शक्ति का कार्य है

इसके अलावा, चार इंद्रियाँ बची हैं। उन के माध्यम से भी चीजों को समझा जाता है एक इंद्री के निषेध से अन्य इंद्रियों का निषेध सिध्द करना मूर्खता के सिवा कुछ नहीं है।

1.Contradiction 2. Categorical Mistake

वैज्ञानिक तर्क:

तरंगदैर्ध्य और संकेत के अस्तित्व को हर कोई स्वीकृत करता है इसी तरह आत्मा के अस्तित्व को भी, हालांकि इनके सिवा अन्य बहुत सी चीज़ें नजर नहीं आतीं तो हर नज़र ना आने वाली चीज को नकारना मूर्खता है

अंत में एक घटना के बारे में

दिल्ली के एक धार्मिक विद्वान अनवार-उल-हक फतेहपुरी साहब एक बार दक्षिण अफ्रीका जा रहे थे। एक ब्रिटिश नास्तिक ने उन्हें एक जहाज में नमाज़ पढ़ते हुए देखा। जब फारिग हुए तो अंग्रेज नास्तिक ने आश्चर्य से पूछा के आप यह उठक बैठक क्या कर रहे थे अल्लामा साहब ने उत्तर दिया, "मैं ख़ुदा की पूजा कर रहा था। खुदा का नाम सुनते ही वह हंसने लगा मैंने तो आज तक खुदा देखा ही नहीं तो उस पर विश्वास करने का क्या फायदा ?' अल्लामा साहब ने कहा कि दुनिया में बहुत सी ऐसी चीज़े मौजूद हैं जिन्हें हम देखते नहीं हैं लेकिन मानते हैं जैसे ध्वनि, आत्मा, वायु आदि-

अल्लामा साहब ने फिर पूछा के आप बुद्धिमान हो या मूर्ख?" तो उसने उत्तर दिया कि मैं बुद्धिमान हूं, आपने पूछा क्या इसपर कोई तर्क है? तो कहा, " मेरा उठना बैठना चलना फिरना सब कौशल तथा शैली के साथ है यह इस बात का प्रमाण है कि मैं बुद्धिमान हूं।" अल्लामा ने कहा के आश्चर्य की बात है के इन छोटे-छोटे प्रभावों और लक्षणों से अपनी बुद्धि पर तर्क देते हो और इस विशाल ब्राह्मण से ख़ुदा के अस्तित्व पर तर्क नहीं देते

आपने मज़ीद पूछा कि यद्यपि ख़ुदा को देखा तो नहीं जा सकता है, लेकिन मैं फिर भी कोशिश करूंगा कि वो अपनी पवित्र ज़ात का जलवा दिखा दे लेकिन मुझे बताओ कि उसका जलवा कौन देखेगा? उसने तुरंत कहा, "मैं देखूंगा"। तो उन्होंने कहा, मुझे पहले "मैं" दिखा दें , फिर मैं ख़ुदा को दिखाने की कोशिश करूंगा।" तो उसने अपनी छाती पर हाथ रखकर कहा, "यह मैं हूं।" तो अल्लामा ने कहा ये "मैं" नहीं छाती है फिर उसने अपने सर पर हाथ रखकर कहा, यह "मैं" हूं तो कहा के ये "मैं" नहीं सर है, अंत में वह शरीर की दुनिया में होते हुए भी "मैं" को निर्धारित नहीं कर सका, और तंग आकर चला गया

अंतिम बात

रचयिता और रचना के बीच स्पष्ट अंतर को न समझने या अनदेखा करने के कारण बचकाना संशयवाद को तर्क के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि हमने ऊंट से सबसे अच्छी सवारी बनाई है, इसलिए हमें ही निर्माता और ख़ुदा के रूप में स्वीकार करें। ! आदि।

अल्लाह हमें गलतफहमी से बचाए और हमें धर्म की सही समझ प्रदान करे

وماعلینا الا البلاغ المبین وآخر دعونا ان الحمدالله رب العالمین والصلوۃ والسلام علی خاتم النبیین